**Title:** Need to conduct an enquiry into the death of Dr. Shyama Prasad Mukherjee, Leader of Opposition in Kashmir jail.

श्री चमन लाल गुप्त (ऊधमपुर): सभापति जी, डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का जन्म बंगाल में हुआ था और जम्मू-कश्मीर के अन्दर जब जम्मू-कश्मीर को भारत से अलग करने की एक साजिश रची जा रही थी, वहां पर एक आन्दोलन चला, एक देश के अन्दर दो विधान, दो निशान, दो प्रधान नहीं चलेंगे, नहीं चलेंगे। इस आन्दोलन का नेतृत्व करने के लिए डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी बंगाल से कश्मीर की धरती पर गये। उन्होंने कहा कि कश्मीर भारत का अटूट अंग है, इसलिए मैं कोई परमिट लेकर कश्मीर की धरती पर नहीं जाऊंगा। रावी के किनारे पर, जहां से कश्मीर की सीमा शुरू होती है, डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी को गिरफ्तार किया गया था। वे विरोधी दल के नेता थे। विरोधी दल के नेता जम्मू-कश्मीर की धरती पर गिरफ्तार तो हुए, वहां से उनको ले जाकर कश्मीर की जेल के अन्दर बन्द किया गया, लेकिन वापस उनकी लाश आई थी। यद्यपि उनकी मृत्यु ने भारत और कश्मीर के बीच में जो दीवारें खड़ी थीं, उनको तोड़ा है। उस समय कश्मीर में परमिट टूट गया, कस्टम हट गया, वहां के जो प्रधान मंत्री कहे जाते थे, वे चीफ मिनिस्टर हो गये, वहां सदरे-रियासत गवर्नर हो गये। वहां पर सुप्रीम कोर्ट लागू हो गया, वहां ऑडिटर जनरल लागू हुआ, वहां पर इलैक्शन होने शुरू हो गये, वहां पर अन्य बहुत सारे लेबर लॉज़ लागू हुए।

यद्यपि ये सारी दीवारें टूटीं, लेकिन आज भी दुर्भाग्य से मैं कह सकता हूं कि उनकी मौत के ऊपर एक परदा पड़ा हुआ है। आज भी वे विरोधी दल के नेता, कश्मीर की धरती पर जिनका बलिदान हुआ, आज भी उनकी इन्क्वायरी नहीं हुई है कि वे मरे हैं या मारे गये हैं। मेरा आपसे निवेदन है कि आज जबकि अपनी सरकार है, जो श्यामा प्रसाद मुखर्जी को हमेशा पूजते हैं तो उनकी इस मृत्यु की इन्क्वायरी तुरन्त होनी चाहिए ताकि दूध का दूध और पानी का पानी हो जाये। यह एक इतनी गम्भीर समस्या है कि विरोधी दल का नेता जेल के अन्दर मारा जाये, मेरा आपसे निवेदन है कि सरकार तुरन्त इसकी इन्क्वायरी का आर्डर दे। सुभाष जी और गांधी जी की मृत्यु की इन्क्वायरी बहुत समय के बाद हुई हैं, इसलिए कोई वजह नहीं है कि डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की मृत्यु की इन्क्वायरी न हो।